सरकारी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का रचनात्मक आंदोलन

रेलगाड़ी

बालमन एक्सप्रेस

जुलाई - अगस्त २०२६

प्रधान संपादक : शरद कुमार वर्मा

SCAN ME

Or Click Me

बालमन

बालमन बच्चों की रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति को एक सशक्त मंच प्रदान करने वाली बाल पत्रिका पहल है। इसकी शुरुआत धीरज कुमार राजकीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक के द्वारा टीचर्स ऑफ बिहार (Teachers of Bihar) के अंतर्गत एक जिला स्तरीय बाल पत्रिका के रूप में की गई थी। बच्चों, शिक्षकों और शिक्षा से जुड़े रचनात्मक लोगों के निरंतर सहयोग से इसका विस्तार होता गया और जिला स्तर से आगे बढ़ते हुए यह राज्य स्तर और अब राष्ट्रीय स्तर की पहल के रूप में विकसित हो चुकी है।

आज भी बालमन तथा बालमन परिवार से जुड़ी सभी सहयोगी पत्रिकाएँ टीचर्स ऑफ बिहार के अंतर्गत संचालित होती हैं। बालमन अब केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक ऐसा मुख्य रचनात्मक मंच (Umbrella Platform) है, जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों, जिलों, प्रखंडों एवं विद्यालयों में बच्चों की स्थानीय पत्रिकाओं को विकसित करने के लिए मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाता है।

बालमन परिवार की वर्तमान सहयोगी शाखाओं में—

- **बालमन — मुख्य शाखा**
- **बालमन रेलगाड़ी — उत्तर प्रदेश**
- **बालमन झरोखा — छत्तीसगढ़**

शामिल हैं। भविष्य में अन्य राज्यों, जिलों, प्रखंडों और विद्यालयों की बाल पत्रिकाएँ भी बालमन परिवार से जुड़कर अपनी विशिष्ट स्थानीय पहचान के साथ कार्य कर सकती हैं।

यदि आप भी अपने राज्य, जिले, प्रखंड या विद्यालय में बच्चों के लिए पत्रिका शुरू करना चाहते हैं, तो बालमन एवं टीचर्स ऑफ बिहार से जुड़कर आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

बालमन — जिला से शुरू हुई एक पहल, जो आज बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का बढ़ता हुआ राष्ट्रीय परिवार है।

एक पहल — टीचर्स ऑफ बिहार

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय विद्यार्थियों,

तेज तपती धूप के बाद बारिश की छम- छम करती बूँदे जब धरती पर गिरती है तो ऐसा लगता है जैसे की वह प्रसन्नता में नृत्य कर रही हों। उनके साथ झूम उठती हैं वृक्षों की लताएं, पत्तियां व पुष्प और पशु- पक्षी। ऐसा अनुभव होता है कि मानो वर्षा ऋतु उत्सव मना रही हो अपने आनंद की पराकाष्ठा में।

हम सब भी भीगे- भीगे इस मौसम में, सराबोर हों प्रकृति के स्नेह, दुलार और उसकी ममता में। क्योंकि उसकी छाँव में ही हमारी वास्तविक उन्नति है। अपने पर्यावरण से प्रेम करें। उसे प्रदूषित होने से बचाने का संकल्प लें ।

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा ने कहा है-

जंगल के उपकार, मिट्टी, पानी और बयार ,
मिट्टी पानी और बयार जिंदा रहने के आधार।

जय शिक्षा, जय शिक्षक, जय शिक्षार्थी !

शरद कुमार वर्मा

शिक्षक

रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल चारबाग , लखनऊ

मोबाइल नंबर 9838214110

शुभकामना संदेश

रेलगाड़ी पत्रिका सचमुच सरकारी विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का रचनात्मक आंदोलन है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र - छात्राओं और शिक्षकों के रचनात्मक कार्यों का प्रकाशन हो रहा है। मैं पत्रिका के संपादक श्री शरद कुमार वर्मा जी को उनके छात्र जीवन से जानता हूं। लोटपोट, नंदन , चंपक, सुमन सौरभ, बाल हंस आदि बच्चों की लोकप्रिय पत्रिकाओं में उनकी लिखी कहानियों, कविताओं और लेख आदि का प्रकाशन होता रहा है। वह एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

उनके कुशल संपादन में रेलगाड़ी की गति बढ़ती जाए, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ। मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि जिस प्रकार एक रेलगाड़ी अपने डिब्बों में बैठे यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाती है, उसी प्रकार यह पत्रिका भी बच्चों के विचारों, भावनाओं और प्रतिभाओं को समाज तक ले जाने का एक सशक्त माध्यम बनेगी।

आज 21वीं सदी का युग सूचना और तकनीक का युग है यह हमारे विद्यार्थियों को लेखन, चित्रकला, कविता, विज्ञान और सामान्य ज्ञान के क्षेत्र में अपनी रचनात्मकता दिखाने का सुनहरा अवसर भी प्रदान करती है। मेरा मानना है कि प्रत्येक बच्चे के अंदर एक लेखक, एक कवि और एक वैज्ञानिक छिपा होता है। " पत्रिका के माध्यम से उसका प्रकाशन होगा। यह गर्व की बात है।

जितेन्द्र कुमार मिश्र
प्रधानाचार्य
श्री गुरु कार्ष्णि इंटर कॉलेज महावन मथुरा

रेलगाड़ी की संपादकीय टीम

प्रधान संपादक

शरद कुमार वर्मा

संरक्षक सह संस्थापक

शिव कुमार

संरक्षक सह टेक्निकल टीम लीडर

शिवेंद्र कुमार सुमन

ग्राफिक डिजाइनर

धीरज कुमार एवं शरद कुमार वर्मा

बालमन पत्रिका (राष्ट्रीय संपादक)

धीरज कुमार

हमारा परिवार

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

टीचर्स का बिहार की राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित बच्चों की रचनात्मक और सृजनात्मक प्रतिभा को एक नया आयाम देता ई पत्रिका। श्री धीरज कुमार के नेतृत्व में प्रकाशित।

उत्तर प्रदेश बालमन टीम द्वारा प्रकाशित रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस उत्तर प्रदेश राज्य के बच्चों के लिए श्री शरद कुमार वर्मा के नेतृत्व में प्रकाशित ई पत्रिका।

छत्तीसगढ़ बालमन टीम द्वारा प्रकाशित बालमन झरोखा छत्तीसगढ़ राज्य के बच्चों के लिए श्रीमति दीपिका श्रीवास्तव के नेतृत्व में प्रकाशित ई पत्रिका।

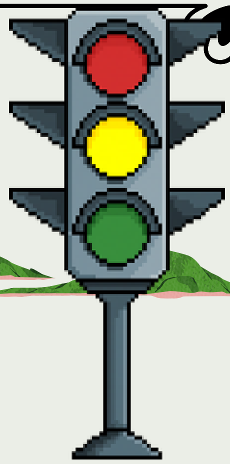

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
1	डॉटस मिलाओ	चित्र बनाओ	6
2	कविता	जल कहता है	7
3	कहानी जंक्शन	चीटें की जान	9
4	कला जंक्शन	विशेष	17
5	कार्टून	कोना	18
6	प्रतिभा	प्लेटफॉर्म	21
7	खेल	जंक्शन	23
8	क्विज	UP विशेष	24

बालमन डॉट्स मिलाओ चित्र पूरा बनाओ

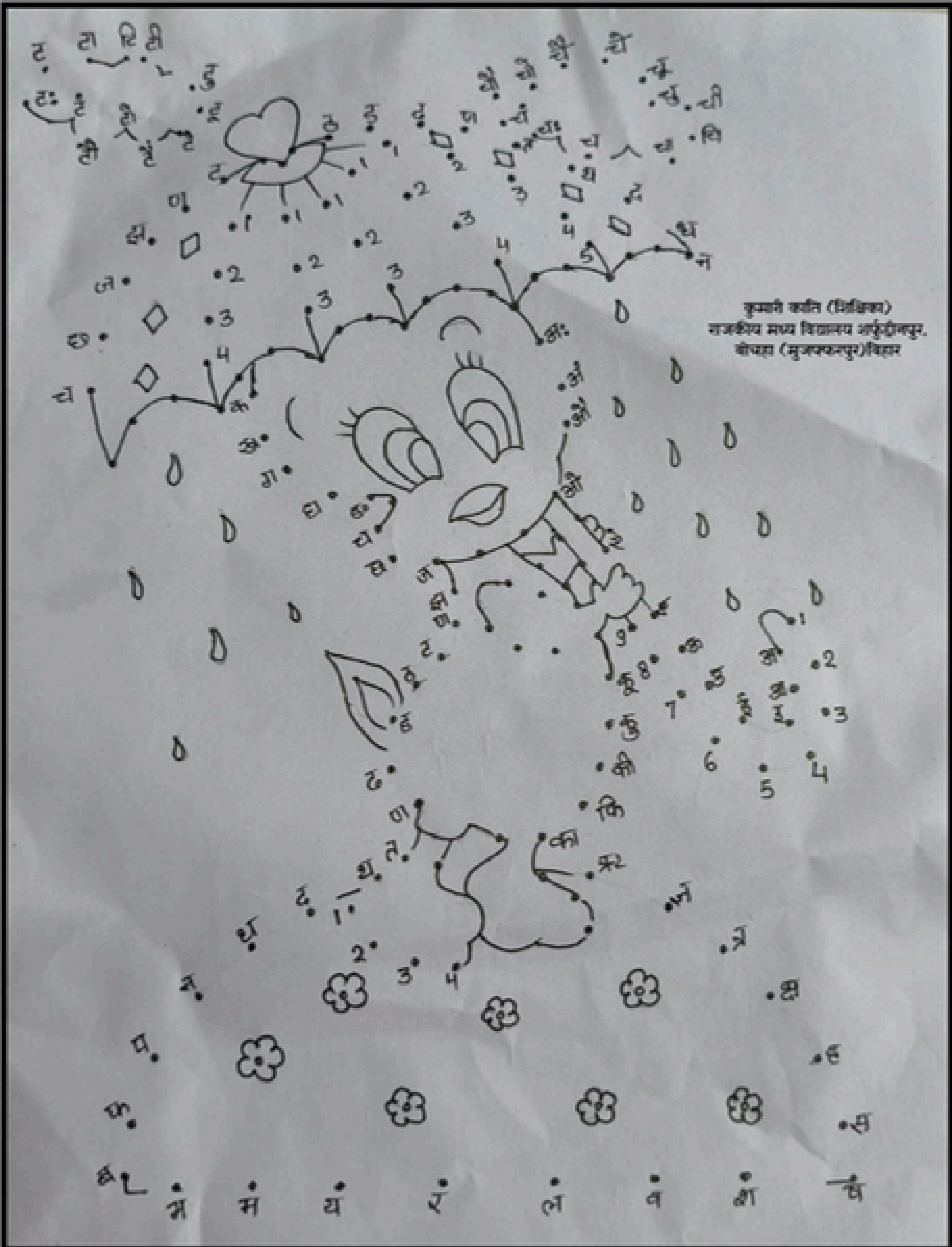

सभी नंबर को जोड़ते हुए बनी आकृति को रंग कर आप हमें 9431680675 पर भेज सकते है।

कविता

जल हमसे यह कहता है

- सौम्या

आज जल जो देखते हैं हम, क्या वो कल देख पाएंगे?
क्या बचेगी ये धरती हमारी, जब जल ही ना पाएंगे
कचरे से भरती है नदियाँ, जल अब हमसे कहता है
खत्म हो गई क्या ये जरूरत , दिल ये अक्सर डरता है
बूँद बूँद का मोल समझ लो, समय अभी भी बाकी है
कर लें संकल्प आज हम सब, इस धरती को अपनाएंगे
आज जल जो देखते हैं हम, क्या वो कल देख पाएंगे?

कक्षा - 10

लखनऊ मोंटेसरी इंटर कॉलेज,
पुराना किला, लखनऊ

सबसे अलग हूं मैं...

कुमारी कान्ति (शिक्षिका)
मध्य विद्यालय शर्फुद्दीनपुर बोचहा
मुजफ्फरपुर(बिहार)

दिए गए चारों आकृतियों में से सबसे अलग आकृति को पहचाने और घेरा लगाएं

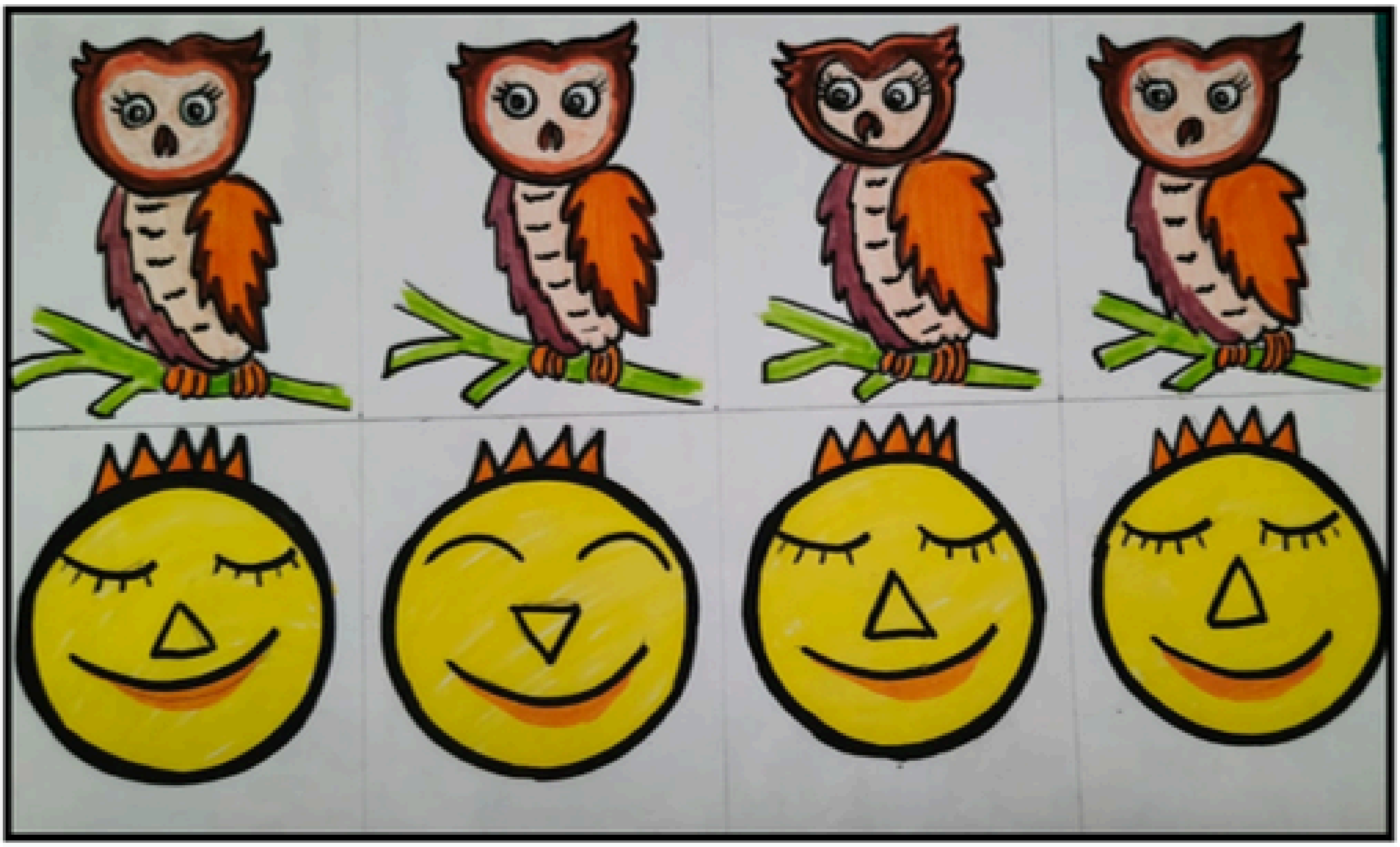

आइए ऐसे भी सोचते हैं

कीमत 1 रुपये कम (1000 के बदले 999 क्यों?)

999 दिखता है 1000 से काफी कम, यही है दिमाग का खेल

मार्केटिंग की दुनिया में इसे साइकोलॉजिकल प्राइसिंग कहा जाता है। इसमें कीमत को इस तरह रखा जाता है कि ग्राहक को वह सस्ती महसूस हो। मसलन, 999 रुपये की कीमत असल में 1000 रुपये से सिर्फ 1 रुपये कम है, लेकिन हमारा दिमाग इसे 900 रुपये के आसपास महसूस करता है। वजह यह है कि हम कीमत को सबसे पहले बायें अंक से पढ़ते हैं। यानी 999 में दिमाग पहले '9' देखता है, जबकि 1000 में '1' के बाद तीन शून्य नजर आते हैं। यही छोटा सा अंतर खरीदारी के फैसले को प्रभावित कर सकता है। तीन अंकों की कीमत देती है बचत का एहसास। कंपनियां अक्सर चाहती हैं कि ग्राहक को लगे कि वह कोई अच्छा सौदा कर रहा है।1000 रुपये की कीमत के मुकाबले 999 रुपये का टैग ज्यादा आकर्षक लगता है। यही वजह है कि सेल, ऑफर और डिस्काउंट में 99, 199, 499 और 999 जैसी कीमतें खूब दिखाई देती हैं।

कहानी जंक्शन

चींटे की जान

कई दिनों से बारिश हो रही थी। रास्तों में जल भर जाने के कारण
मेरे विद्यालय में छुट्टी हो गई थी।
घर में बैठे- बैठे मेरा नहीं लग रहा था। सोंच रहा था कि काश, बारिश रुक जाती
और मैं घर से बाहर निकल कर घूमता- फिरता,
लेकिन बरसात रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

घर के गेट पर बाहर का दृश्य देख रहा था ।चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई
दे रहा था। कि एकाएक मैंने देखा कि एक मोटा सा चींटा बारिश में
भरे पानी के बहाव में कहीं दूर से बहता हुआ आ रहा है। चीटे को देखकर मेरे मन में
उसकी जान बचाने का ख्याल आया। दिमाग दौड़ाने लगा कि किस तरह
उस डूबने से चींटे जान की बचाई जाए। फिर मैंने तुरंत गमले में लगे गुड़हल की
एक टहनी तोड़
कर उस ओर फेंक दी जिधर से चींटा डूबता- उतराता आ रहा था।
टहनी पाकर चींटा झट से उस पर चढ़ गया। उसकी जान बच गई थी ।यह देख मैंने
खुशी में ताली बजाई। दूर बैठी मेरी मां यह सब देख मुस्करा रहीं थीं।

-

- अर्पित गुप्ता कक्षा 8, रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल ,चारबाग लखनऊ

कविता

छुक-छुक करके जाती रेल

छुकछुक करके जाती रेल।
बच्चे मिलकर खेलें खेल।।

पहला बच्चा इंजन बनता ।
उसके पीछे सारी जनता।
एक दूसरे को हैं पकड़े।
जैसे सब आपस में जकड़े।
और दिखाते अपना मेल।
छुकछुक करके जाती रेल।
बच्चे मिलकर खेलें खेल।।1।

स्टेशन पर वे रुक जाते ।
इक दूजे को तभी छुडाते ।
बजती सीटी वे चल देते ।
आपस में बातें कर लेते ।
कभी मचाते ठेलम ठेल।
छुकछुक करके जाती रेल।
बच्चे मिलकर खेलें खेल ।।2।

हँसी के ठिठौली करते जाते ।
आपस में सब गीत सुना
झंडी हरी लाल दिखलाते ।
नियमों का पालन करवाते।
होते पास और कुछ फेल ।
छुकछुक करके जाती रेल ।
बच्चे मिलकर खेलें खेल।3।।

जब चलती तब झटका देती।
हर इक की वह खबरें लेती।
अलग थलग जब भी हो जाते ।
हँस हँसकर बच्चे थक जाते।
अन्त पहुँचती अन्तिम टेल ।
छुकछुक करके जाती रेल ।
बच्चे मिलकर खेलें खेल ।।

- प्रेम शंकर शास्त्री 'बेताब '
प्रवक्ता एवं कवि
महाराजाअग्रसेन इंटरमीडिएट कॉलेज,
मोती नगर, लखनऊ

मन हो गया अपना केसरिया

आज उठकर सबसे पहले
धरती मां को किया प्रणाम।
पहने अपनी खादी के कपड़े
गाया रघुपति राघव राजा राम॥

मन हो चला अपना केसरिया
जब गूंजा देशभक्तों का नाम।
मैं तो रम गया गया राष्ट्र पर्व में
दीप जले जब घर घर शाम॥

– शरद कुमार वर्मा, शिक्षक

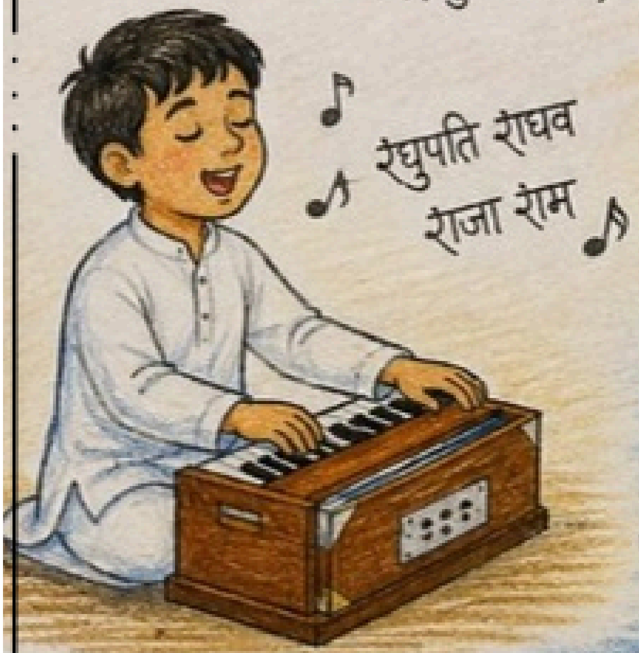

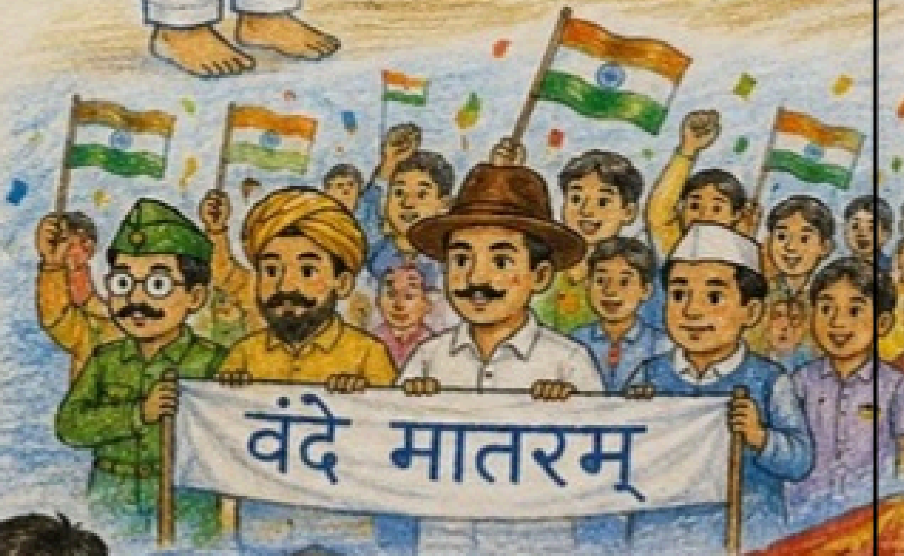

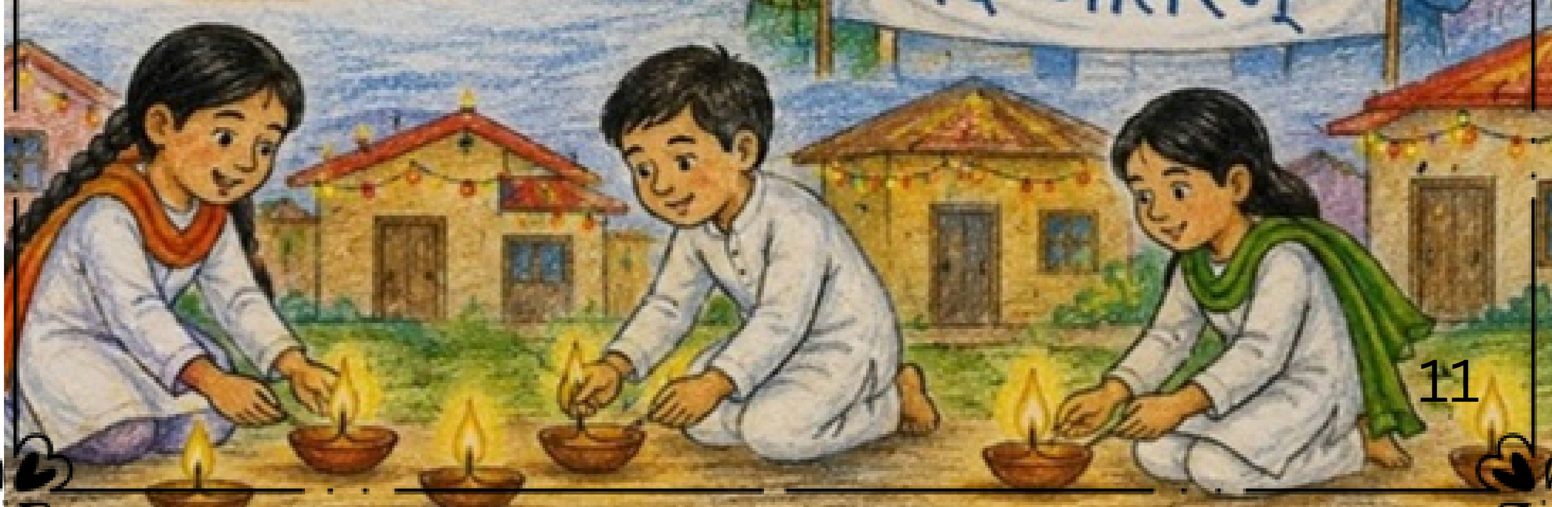

हँसी के 😆 हसगुल्ले

हसगुल्ले चाचा
अरविंद कुमार(शिक्षक)
NPS हसनपुरा, भभुआ
(कैमूर)

बच्चा :- स्कूल में गधा लेकर आया
टीचर :- इसे क्यों लाए हो...
बच्चा:- मैंम आप ही तो कहती हो कि मैंने बड़े से बड़े गधे को इंसान बनाया है, मैंने सोचा इस बेचारे का भी भला हो जाएगा !!

दवा दुकानदार से एक ग्राहक बहुत टेढ़े और बड़बोलेपन से : ये दुकान वाला ENO देना।
दुकानदार प्यार से : सरजी अगर आपके पास 'EGO' है तो आप केवल
मुंह फुला सकते हैं. लेकिन,अगर आपके पास 'ENO' है तो आप ढोकला, भटूरे सब फुला सकते हैं... इसलिए, ENO रखिए EGO नहीं

टीचरः बताओ, दुनिया में सबसे तेज़ क्या चलता है?
आप्पूः दिमाग !
टीचरःकैसे?
आप्पूःक्योंकि छुट्टी की घंटी बजते ही मेरा दिमाग घर पहुँच जाता है, शरीर तो बाद में आता है!

बालमन एक्सप्रेस कविता

बच्चों तुमने देखा

बच्चों तुमने देखा, भारत में आजादी आयी है।
पर हमने इस आजादी की कीमत बड़ी चुकायी है।

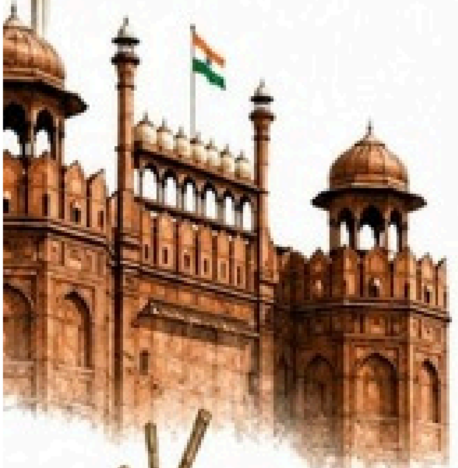

हाँ भारत आजाद हुआ है ,
अंग्रेजों की लाठी से,
गोरे वापस लौट गए डरकर
भारत की माटी से,
हिंसा और अहिंसा दोनों ने
मिलकर यह जंग लड़ी,
भारत भी तब अलग हुआ था
कुछ अपनी परिपाटी से,
यूँ भारत माँ को आजादी की माला पहनायी है,
पर हमने इस आजादी की कीमत बड़ी चुकायी है।

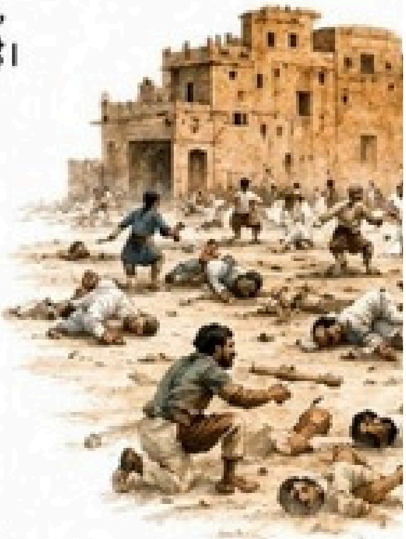

लालकिले से पूछो उसने
कितनी रातें जागी हैं,
कितने भगत मिले मिट्टी में,
कितनी दुर्गा भागी हैं,
जलियांवाला बाग बताएगा
तुम उससे पूछो तो,
कितनी माँओं, विधवाओं ने
अपनी सांसे त्यागी है,
कितने खुदीराम ने खुद ही फाँसी गले लगायी है,
हाँ हमने इस आजादी की कीमत बड़ी चुकायी है।

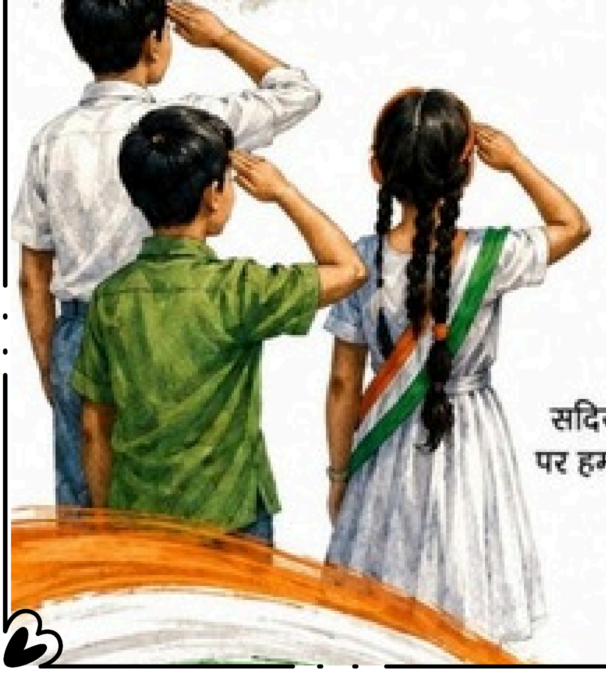

बच्चों तुम हो कर्णधार अब
भारत की आजादी के,
वंशज हो गांधी, नेहरू के
व पटेल बलिदानी के,
लालकिले से जो चमकी थी
नए सूर्य की लाली थी,
और तिरंगे संग गुंजी भारत
की नयी सुबादी थी,
सदियों की पीड़ा सहकर हमने आजादी पायी थी,
पर हमने इस आजादी की कीमत बड़ी चुकायी थी।

— अनुपम तिवारी
अंग्रेजी शिक्षक
टेक्निकल इंटरमीडिएट कॉलेज
लखनऊ।

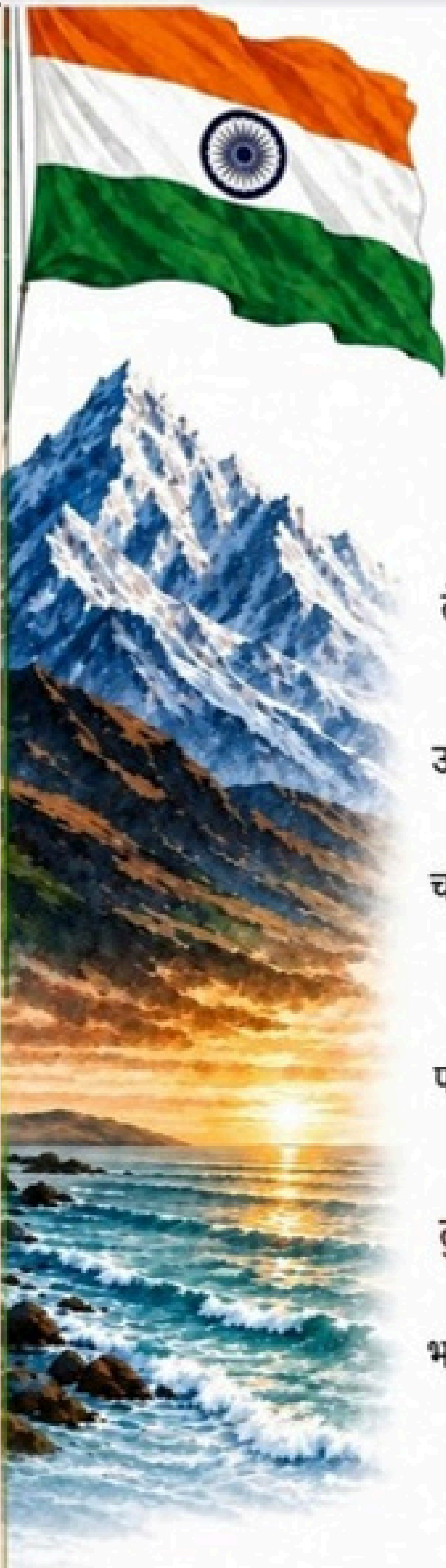

देश तुम्हें नमन

कविता

रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस

देश तुम्हें है नमन
तुम्हारा अभिनन्दन
तेरी रज कण लगती हमको
माथे का चन्दन....

उत्तर में गिरिराज हिमालय
गौरव भाल हमारा....
चरणों में सागर विशाल का
फैला हुआ किनारा....
पूरब से पश्चिम तक
पग-पग तेरा ही वन्दन.....

देश तुम्हें है नमन
तुम्हारा अभिनन्दन.....

भगत सिंह, बिस्मिल, शेखर
से तेरे पुत्र निराले
लक्ष्मी, दुर्गा जैसी बेटी
रण में शस्त्र उठा ले
तेरे आँचल में वीरों का
होता है संवर्धन

देश तुम्हें है नमन
तुम्हारा अभिनन्दन......

तीन रंग में रंगा हुआ है
सुंदर ध्वज अपना
विश्व गुरु बनने का अब तो
पूर्ण हुआ सपना
तेरी यश गाथाओं से
उर में है स्पंदन.......

देश तुम्हें है नमन
तुम्हारा अभिनन्दन....

तेरी रजकण लगती हमको
माथे का चन्दन.......

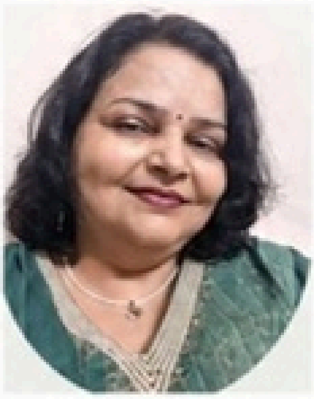

- बत्सला पाण्डेय , शिक्षिका ,
लखनऊ मॉंटिसरी इंटर कॉलेज,
लखनऊ

चित्र देखे और कहानी बनाएं

कुमारी कान्ति (शिक्षिका)
मध्य विद्यालय शर्फुद्दीनपुर बोचहा
मुजफ्फरपुर(बिहार)

1

3

2

4

उत्तर प्रदेश में प्रथम

रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस

सामान्य ज्ञान

यूपी के पहले मुख्यमंत्री -
गोविंद बल्लभ पंत

यूपी की प्रथम राज्यपाल -
सरोजिनी नायडू

यूपी के पहली महिला मुख्यमंत्री-
सुचेता कृपलानी

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश -
वॉल्टर मॉर्गन

यूपी विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष -
पुरुषोत्तम दास टंडन

यूपी के प्रथम सूचना आयुक्त -
मोहम्मद असगर

यूपी के पहले लोकायुक्त -
जस्टिस बिसंभर दयाल

यूपी की सबसे अधिक बार मुख्यमंत्री -
मायावती (चार बार)

कला जंक्शन

एक छोटी कलाकार ऐसी भी....

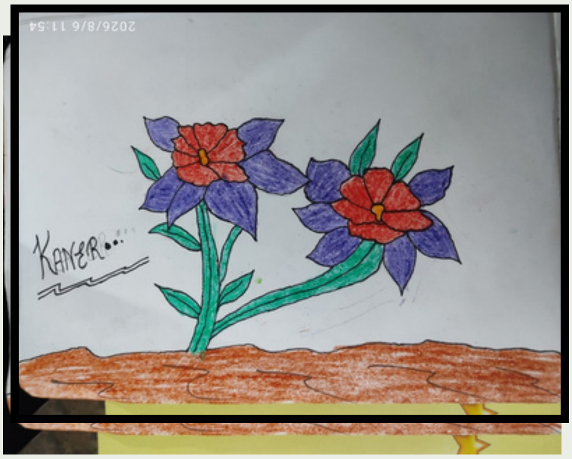

चित्रकार- अनामिका मौर्य, कक्षा 6, रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल,चारबाग,लखनऊ

रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस
कार्टून कहानी

बारिश में मज़ा ही मज़ा!

एक हास्य चित्रकथा

बारिश हो या मुसीबत... मज़ाक में लो तो मज़ा है!

Dreams -Come- True!

सपने में दिखी एक तस्वीर को साकार किया

कीर्ति विश्वकर्मा, कक्षा 7

स्वतन्त्रता दिवस आने वाला था ।अन्य बच्चों की तरह मैं भी कुछ ड्राइंग बनाना चाह रही थी। मन में सूझ नहीं रहा था कि क्या बनाऊं। फिर मुझे एक रात सोते समय सपने में एक तस्वीर दिखाई दी। मैंने नीदं से जागने पर उसी को बनाने की ठान ली । पेंसिल, रबड़ आदि लेकर अपने सपने को हकीकत में बदलने का प्रयास किया। कई बार समस्या आई लेकिन फिर मेहनत रंग लाई और परिणाम आपके सामने है। मैंने जब सपने के चित्र को कागज पर बनाया तो मुझमें आत्मविश्वास बढ़ा। मुझे ऐसा लगा कि मैं कुछ नया बना सकती हूं अपनी किताब से हटकर। अपने दिमाग से कुछ नया बनाना सचमुच एक प्रेरणादायक अनुभव देता है। मैं अपने मित्रों को भी इस बात के लिए प्रेरित करती हूं। वे कुछ मौलिक बनाने के लिए रंग और तूलिका उठाए।

-

live your dream.

रेलवे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
लखनऊ (उ. प्र.)

Dream Big

रेलगाड़ी पहुंची भदोही

जापान ,जर्मनी और अमेरिका के लोग पसंद करते हैं उत्तर प्रदेश की बनी कालीन

उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक नगरी वाराणसी के निकट स्थित हमारी भदोही में कालीन का निर्माण खूब किया जाता है।भदोही की कालीन विश्वप्रसिद्ध उत्पाद है। इसका इतिहास का 4000 से 5000 वर्ष पुराना है।मुख्य रूप से यह एक सजावटी वस्तु है जिसका उपयोग राजा-महाराजाओं के जमाने से चला रहा है । यह ऊन, रेशम, कपास और जूट आदि से बनाई जाती है। एक कालीन बनाने में महीनों लग जाते हैं।भदोही के बने खूबसूरत कालीन की मांग जापान, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में है। एक कालीन का मूल्य हज़ार रुपए से लेकर लाखों रुपए तक है। मिर्जापुर ओर वाराणसी के मध्य बसा भदोही का नाम लेते ही लोगों मन मस्तिष्क में सुंदर कालीन छा जाती है। मुझे गर्व होता है अपने भदोही की बनी कालीन पर और यहां के बुनकरों पर, जिन्होंने विश्व के मानचित्र में अपने प्रदेश का नाम ऊंचा किया है और भदोही को एक उच्च स्तरीय पहचान दिलाई ।

- आयुष श्रीवास्तव
कक्षा 10
राजकीय इंटर कॉलेज, भदोही

प्रतिभा का प्लेटफॉर्म

रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस

करामत हुसैन मुस्लिम बालिका इंटर कॉलेज लखनऊ की कक्षा 10 की छात्राओं ने बनाया अंग्रेजी प्रोजेक्ट

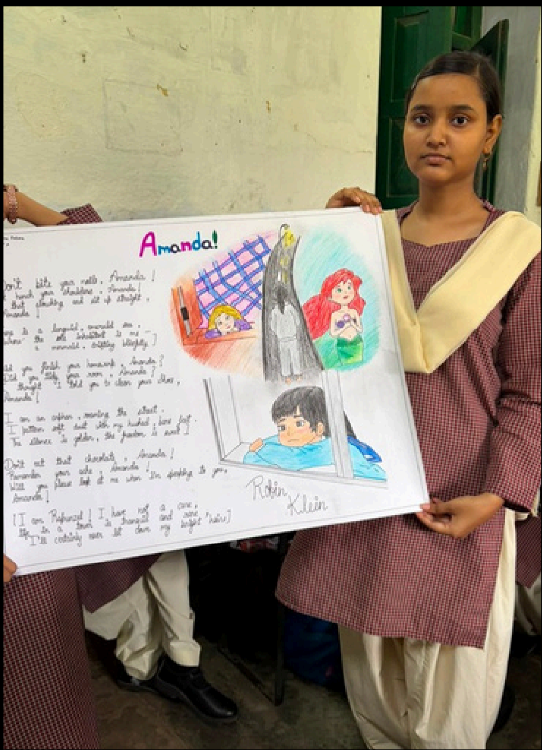

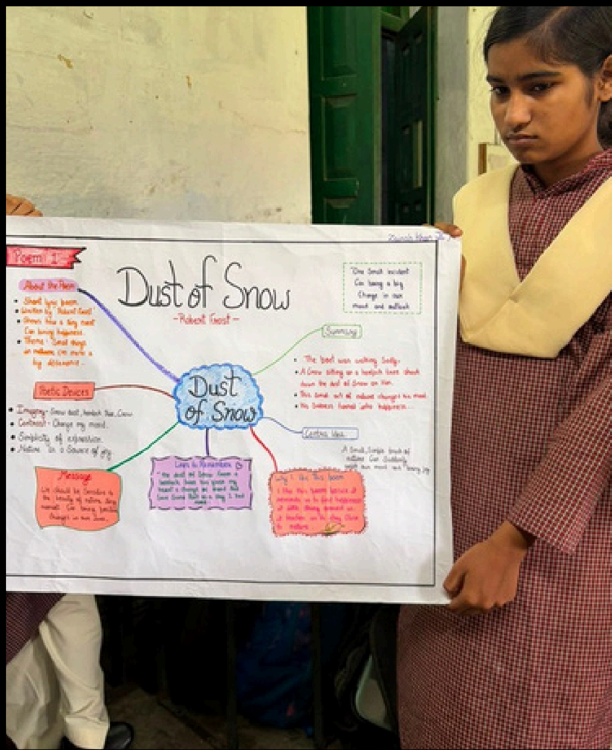

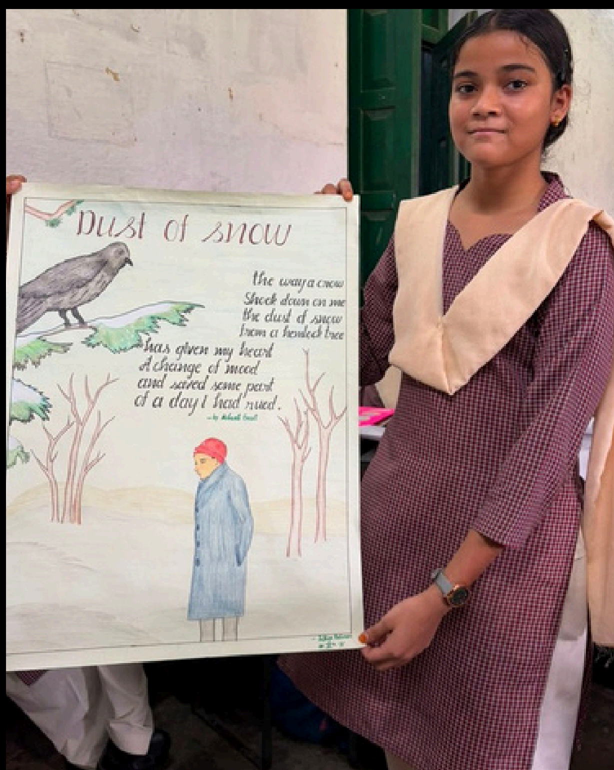

बहन तुम्हारी राखी प्यारी

बहन तुम्हारी राखी प्यारी
जैसे बगिया में फूलों की क्यारी ।
नेह की खुशबू उड़े गगन में
सिस्टर नम्बर वन हमारी ।।

- अमन जायसवाल
मनोहर भूषण इण्टर कॉलेज,
बरेली (उ.प्र.)

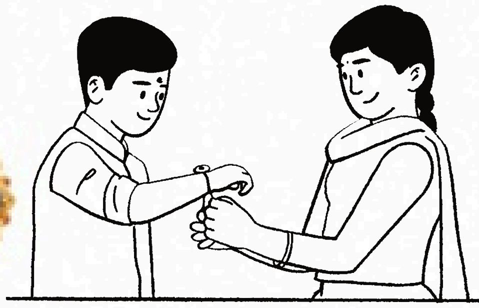
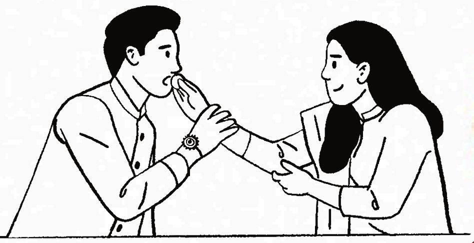

खेल जंक्शन

रेलगाड़ी बालमन एक्सप्रेस

दिनांक 23 अगस्त 2026 लखनऊ के प्रसिद्ध के डी सिंह बाबू स्टेडियम में मैराथन हुआ। जिसमें रामाधीन सिंह इंटर कॉलेज, लखनऊ की पांच छात्राओं ने प्रतियोगिता को जीतकर अपना और अपने विद्यालय का नाम ऊंचा किया और पुरस्कार में साइकिल प्राप्त की। इन बच्चों की इस उपलब्धि का श्रेय उनकी लगन और खेल शिक्षक विप्लव चौधरी को जाता है।

के डी सिंह बाबू स्टेडियम में छात्राओं ने लहराया अपना परचम

1 उत्तर प्रदेश की राजधानी क्या है?

- Ⓐ लखनऊ
- Ⓑ प्रयागराज
- Ⓒ वाराणसी
- Ⓓ कानपुर

2 ताजमहल किस जनपद में स्थित है?

- Ⓐ लखनऊ
- Ⓑ आगरा
- Ⓒ फिरोजाबाद
- Ⓓ मथुरा

3 कुंभ मेला किस शहर में लगता है?

- Ⓐ वाराणसी
- Ⓑ प्रयागराज
- Ⓒ हरिद्वार
- Ⓓ गोरखपुर

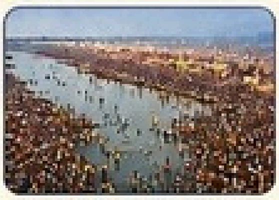

4 उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी कौन है?

- Ⓐ मोर
- Ⓑ सारस
- Ⓒ तोता
- Ⓓ बुलबुल

5 रामायण सर्किट का प्रमुख स्थान नहीं है?

- Ⓐ अयोध्या
- Ⓑ चित्रकूट
- Ⓒ नैमिषारण्य
- Ⓓ दीदारगंज

6 निम्नलिखित में से कौन-सा मेला उत्तर प्रदेश में नहीं लगता है?

- Ⓐ देव दीपवली (वाराणसी)
- Ⓑ पशु मेला (बक्सर)
- Ⓒ सोनपुर मेला
- Ⓓ पुष्कर मेला

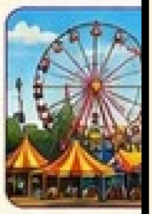

7 बुद्ध का प्रथम उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन) कहां हुआ था?

- Ⓐ कानपुर
- Ⓑ सारनाथ
- Ⓒ कुशीनगर
- Ⓓ श्रावस्ती

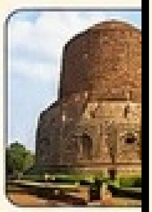

8 उत्तर प्रदेश की प्रमुख हस्तशिल्प कला कौन-सी है?

- Ⓐ चंदेरी साड़ी
- Ⓑ सहारनपुरी लकड़ी कारीगरी
- Ⓒ बनारसी ब्रोकेड
- Ⓓ उपरोक्त सभी

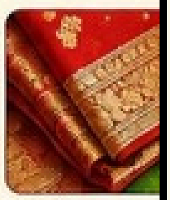

9 उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध मिठाई कौन-सी है?

- Ⓐ पेड़ा
- Ⓑ रबड़ी
- Ⓒ बालुशाही
- Ⓓ उपरोक्त सभी

10 उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान की स्थापना कब हुई

- Ⓐ 1950
- Ⓑ 1952
- Ⓒ 1954
- Ⓓ 1957

रेलगाड़ी

बालमन एक्सप्रेस

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

पत्रिका के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए दिए गए आईकॉन पर क्लिक करे।

आपको यह अंक अच्छा लगे तो अधिक से अधिक राज्य के अन्य प्राथमिक/मध्य/उच्च विद्यालय तक शेयर करे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे

98382 14110 | 9431680675 | 7250818080

www.teachersofbihar.com